



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)

PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 334]

नई दिल्ली, बृहत्पतिवार, जून 27, 1989/आषाढ 6, 1911

No. 334]

NEW DELHI, TUESDAY, JUNE 27, 1989/ASADH 6, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वाली हो जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

दिल्ली संचालन

(राजस्व विभाग)

प्रधिकारी

नई दिल्ली, 27 जून, 1989

अन्तर्राष्ट्रीय बायु यात्रा कर नियम 4/89

सा का नि 646(म)।—कन्द्रीय मरकार, वित्त अधिनियम, 1989 (1989 का 13) की धारा 48 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए नियम बनाती है, अधर्थन्—

1 सक्रिय नाम थीर प्रारम्भ—(1) इन नियमों का संवित नाम अन्तर्राष्ट्रीय बायु यात्रा कर नियम, 1989 है।

(2) ये 1 जुलाई 1990 को प्रदत्त होंगे।

2 परिमाण—इन नियमों में, जब वह कि मदत में अन्यथा दो-धित न हो,—

(क) "प्राधिनियम" से यित्त प्राधिनियम, 1989 (1989 का 13) अधिप्रेत है;

(ख) "सीमांशुलक नहायक कलकटर" ने ऐसा अधिकारी अधिप्रेत है जिसे सीमांशुलक अधिनियम की धारा 4 के अधीन इस रूप में नियुक्त किया गया है और जिसकी अधिकारिता उक्त अधिनियम के अधीन दिल्ली पर है,

(ग) "केन्द्रीय उत्ताप-न्युक्त अधिकारी" का यही अर्थ है जो उक्त केन्द्रीय उत्ताप-न्युक्त और नमक अधिनियम से है;

(घ) "सीमांशुलक कलकटर" से ऐसा अधिकारी अधिप्रेत है जिसे सीमांशुलक अधिनियम की धारा 4 के अधीन सीमांशुलक कलकटर या अपर सीमांशुलक कलकटर, दिल्ली के हैप में नियुक्त किया गया है;

(ङ) "सीमांशुलक कलकटर (प्रोफेसर)" से ऐसा अधिकारी अधिप्रेत है जिसे सीमांशुलक अधिनियम की धारा 4 के अधीन इस रूप में नियुक्त किया गया है;

(ज) "सीमांशुलक अधिनियम" से सीमांशुलक अधिनियम, 1982 (1982 का 52) अधिप्रेत है;

(झ) "सीमांशुलक अधिकारी" का यही अर्थ है जो उसका सीमांशुलक अधिनियम में है;

(ज) "कर" से अधिनियम के अध्याय 5 के अधीन उद्घारणीय अन्तर्राष्ट्रीय बायु यात्रा कर अधिप्रेत है;

(झ) "प्रजाता" से अधिप्रेत है—

(i) सीमांशुलक मदद अजाता, या

(ii) भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 (1934 का 2) की धारा 3 के अधीन गठित भारतीय रिजर्व बैंक या भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम, 1955

(1955 का 23) की धारा 3 के अधीन गठित भारतीय स्टेट बैंक, या बैंककारी कंपनी (उपक्रमों का अधिन और अन्तरण) प्रधिनियम, 1970 (1970 का 5) की धारा 3 के अधीन या बैंककारी कंपनी (उपक्रमों का अधिन और अन्तरण) प्रधिनियम, 1980 (1980 का 40) की धारा 3 के अधीन गठित कोई ऐक जिसमें इस निमित केन्द्रीय सरकार का आता हो।

3. कर का संग्रहण—प्रधिनियम की धारा 42 की उपधारा (2) के अधीन प्राधिकृत वाहक द्वारा कर का संग्रहण अन्तर्वैशीय यात्रा पर पोता-रोहण करने के लिए किसी यात्री या उसके अभिकर्ता को टिकट जारी करने के समय किया जाएगा:

परन्तु ऐसे मामले में जहाँ किन्तु कारणों से कर का संग्रहण टिकट जारी किए जाने के समय नहीं किया जाता है वहाँ कर का संग्रह किसी यात्री के अन्तर्वैशीय यात्रा पर जाने से पूर्व वाहक द्वारा किया जाएगा।

4. कर का प्रतिवाय—(1) ऐसे मामले में जहाँ यात्री टिकट क्रय कर चुकने के पश्चात् अन्तर्वैशीय यात्रा पर न जाने का विनिश्चय करता है वहाँ ऐसी यात्रा के लिए संग्रहण की गई करकी रकम का प्रतिवाय उसको या उसके अभिकर्ता को पूर्ण रूप में वाहक द्वारा उसी रीति में किया जाएगा। जेसे किराए का प्रतिवाय किया जाता है।

(2) किसी अन्य मामले में कोई यात्री या उसका अभिकर्ता वाहक को उसके द्वारा संदर्भ किए गए किसी कर का प्रतिवाय करने का दावा करते के लिए वह कर के संदाय की तारीख से दो वर्ष का कालावधि की समाप्ति के पूर्व या ऐसी यात्रा के अंतिम दिन, जिसके संबंध में प्रतिवाय का दावा किया जा रहा है, जो भी पश्चात्यकर्ता हो, ऐसे कर के प्रतिवाय के लिए वाहक को आवेदन भेज सकेगा।

(3) उपनियम (2) के अधीन किसी आवेदन की प्राप्ति पर, यदि वाहक का समाधान हो जाता है कि संदर्भ किए गए कर की रकम का गलत रूप से संग्रहण किया गया है और उसका प्रतिवाय किया जाना चाहिए तो वह रकम का यात्री या उसके अभिकर्ता को तबनुगार प्रतिवाय कर सकेगा।

(4) जहाँ कोई वाहक कर के रूप में किसी रकम का खजाने से संदाय कर चुके पर, पाता है कि वह संदाय गलत रीति से किया गया है, तो वह ऐसी रकम के प्रतिवाय के लिए सहायक सीमांशुलक कलकटर को उस कर के, जिसके संबंध में प्रतिवाय का दावा किया जाता है, संदाय की तारीख से दो वर्ष की छालावधि की समाप्ति के पूर्व आवेदन कर के दावा कर सकेगा।

(5) यदि उपनियम (4) के अधीन किसी आवेदन की प्राप्ति पर सीमांशुलक सहायक कलकटर का समाधान हो जाता है कि गलत रीति से संदर्भ किए गए कर की रकम का प्रतिवाय किया जाता चाहिए, तो वह तबनुसार आदेश कर सकेगा।¹

5. कर का असंदाय या अनु संदाय:—(1) जहाँ किसी शोध्य कर का यात्री या उसके अभिकर्ता द्वारा किसी भी कारण से, खजाने में संदाय नहीं किया गया है या पूर्णतः संदाय नहीं किया गया है, तो वहाँ वाहक, यात्रा की अंतिम तारीख से दो वर्ष के भीतर यात्री या उसके अभिकर्ता से रकम का संदाय करने के लिए विनियम सांग कर सकेगा।

(2) जो वाहक द्वारा संग्रहीत किए गए किसी कर का किसी कारण से नियम 6 के अधीन खजाने में संदाय नहीं किया गया है या पूर्णतः संदाय नहीं किया गया है अथवा नियम 4 के उपनियम (3) के अधीन गलत रीति से प्रतिवाय किया गया है वहा सीमांशुलक सहायक कलकटर, सुंसंगत तारीख [दो वर्ष] कालावधि के भीतर सम्बन्धित वाहक पर उससे वह देतुक दस्तित करने की अपेक्षा करते हुए सूचना की नामील चर सकेगा कि उसे सूचना में विनियम रकम का संदाय क्षेत्र नहीं करना।

परन्तु जहाँ किसी का संदाय नहीं किया गया है या पूर्ण रूप से संबन्धित किया गया है अथवा वाहक द्वारा उपनियम के कारण या जानकारी कर किसी गलत कथन या तथ्यों को जाने के कारण उसका गलत रीति से प्रतिवाय किया गया है वहाँ इस उपनियम के उपर्युक्त वैसे ही प्रभावी होंगे मानो “दो वर्ष” शब्दों के स्थान पर “पांच वर्ष” शब्द रखे गए हों।

(3) सीमांशुलक सहायक कलकटर उस वाहक द्वारा जिस पर उपनियम (1) के अधीन सूचना की नामील की गई है किए गए अन्यावेदन पर, यदि कोई हो, विचार करने के पश्चात् ऐसे वाहक द्वारा सदन कि जाने वाले कर की रकम जो (जो सूचना में विनियम रकम से प्रधिक नहीं होगी) अवधारण करेगा और तबुहरि ऐसा आदेश इस प्रकार अवधारण रकम का संदाय करेगा।

(4) उपनियम (2) के प्रयोगन के लिए “मुसान लारीब” पर में अधिग्रेत है—

(क) उस दशा में जहाँ कर का संदाय नहीं किया गया है या पूर्णतः संदाय नहीं किया गया है वहाँ उस अन्तर्वैशीय वायु यात्रा के, जिसमें यथास्थिति, असंदाय या अनु संदाय संबंधित है, प्रारंभ की तारीख या ऐसी तारीख जिस पर वाहक इन नियमों के अधीन सुंसंगत विवरणी फाईल कर देता है, इनमें में जो भी पांचांकर्ता हो,

(ब) उस दशा में जहाँ कर का गलत रीति से नियम 4 के उपनियम (4) के अधीन प्रतिवाय किया गया है, वहाँ वह तारीख, जिसको प्रतिवाय किया गया था।

8 खजाने में संदर्भ किया जाने वाले कर—किसी वाहक द्वारा किए जाने वाले समाधान हो जाता है कि संदर्भ की समाप्ति से साठ दिन की समाप्ति के पूर्व खजाने में जाना किया जाएगा।

परन्तु सीमांशुलक कलकटर दृष्टिकोण किए गए पर्याप्त देतुक, पर, और किसी वाहक द्वारा अपनाई गई किसी लेखा पढ़ति का ध्यान रखते हुए, ऐसे वाहक को नज़ेरे दिन से अनधिक की ओर और कालावधि के भीतर ऐसी विवरणी फाईल करने के लिए अनुशासन कर सकेगा।

7 संग्रहीत कर आविष्टि संवित्रण विवरणी—प्रत्येक वाहक जिसमें नियम 6 के अधीन खजाने में कर संदाय करने की अपेक्षा की जाती है प्रत्येक मास की बाबत उस भास के भ्रंत में साठ दिन की समाप्ति के पूर्व सीमांशुलक कलकटर के सामने संग्रहीत कर की रकम, प्रतिवाय की गई रकम और खजाने में संदर्भ की गई रकम दर्शित करने वाले उन नियमों में उपरबढ़ प्रत्यप में विवरणी फाईल करेगा।

परन्तु सीमांशुलक कलकटर, किसी वाहक द्वारा अपनाई गई किसी लेखा पढ़ति का ध्यान रखते हुए, ऐसे वाहक को नज़ेरे दिन से अनधिक की ओर कालावधि के भीतर ऐसी विवरणी फाईल करने के लिए अनुशासन कर सकेगा।

8 वाहक द्वारा अभिलेखों का परिरक्षण—कर के सभ में संग्रहीत रकमें जिन खजानों, खालीनों या बाउचरों के द्वारा खजाने में संदर्भ की गई है, उनकी प्रतिक्रिया, ऐसी अन्तर्वैशीय यात्रा में संबंधित विवरणी और सभी अन्य दस्तबेजों वाहक द्वारा उस तारीख से जिसका ऐसे बालान, बाऊचर, विरणी या अन्य दस्तबेज तेवार किए गए थे, पांच वर्ष की कालावधि तक परिरक्षण रखे जाएंगे।

परन्तु सीमांशुलक कलकटर लिखित प्रारंभ द्वारा और उसमें अभिलिखित किए जाने वाले काग्जों में किसी वाहक से किसी ऐसे बालान, बाऊचर, विरणी या अन्य दस्तबेज की प्रति पांचवर्ष की उक्त संवधि से थीवर्तर अवधि के लिए परिरक्षित करने की अपेक्षा कर सकेगा और ऐसा वाहक, जिसके संबंध में ऐसा आदेश किया गया था, ऐसे आदेश का अनुप्रयन करेगा।

9. भासितयों का व्यापनियन—प्रत्येक ऐसे मामले में जिसमें कोई व्यक्ति अधिनियम की धारा 46 के अधीन भासित का दायी है, ऐसी भासित सीमांशुलक सहायक कलकटर द्वारा व्यापनियन की जा सकेगी।

10 शास्त्रियों के उद्धरण के पूर्व हेतु अधिक अधिकता करने के लिए सूचना का जारी किया जाना —किसी अधिक पर कोई शास्त्र मध्यग्रोषित करने वाला को आदेश तब तक नहीं किया जाएगा जब तक ऐसे अधिकता को

(क) यिस अंदाज़ पर जाल्मी ग्राहितोपयित करता प्रमाणित है, उसे बताते हुए विवेक राम में सूचना नहीं दी जाती है।

(व) ऐसे युक्तियुक्त समय के भोतर, जो मूलना में विनिर्दिष्ट किया जाए, सुचना में उल्लिखित शास्त्र के प्रधिरोपण के प्राधानों के विरुद्ध लिखित अभ्यासेवन करने के लिए अवसर नहीं दिया जाता है;

(ग) मामले में मुनवाई के लिए युक्तिपूर्व अद्वारा नहीं शिपा जाता है।

परन्तु अड (क) में निविष्ट कोई सूचना, यौर, खंड (ख) में निविष्ट प्राप्याधेदन संबंधित व्यक्ति की प्रेरणा पर मौजिक ही सकेगा।

११. आपोन - महायक सोमायुक्त कलकटर द्वारा इस अधिनियम या इन नियमों के प्रक्षेत्र परिवर्त यिसी विनियोग या आवेदन में व्यापित कोई अविक्षित ऐसे विनियोग या आवेदन की संमुचितता को दारोगा से तोन माम के पाठार में आयुक्त कलकटर (अपील), दिल्ली, का अपील कर सकेगा :

परंतु अपेक्षा प्राधिकारी, यदि उनका यह सनाधन हो जाता है कि अधिकारी का तान मास को पूर्वांकित कालवधि के भोतर अपेक्षा करने से पर्याप्त कारण से निवारित किया गया था तो वह तान मास को अतिरिक्त अवधि के भोतर उमेरेश करने का अनुज्ञा द सकता।

(2) अपोल प्राविकारी अपीवार्षी को सूनवाई का अवसर देने के पश्चात् यदि वह ऐसा चाहे तो और ऐसी आवं करने के पश्चात्, जो प्राविष्टक हो, ऐसा भावेन पास्त कर सकेग जो वह उस विनियम या प्राविश की, जिसके बिना अग्रिम को गई है, पुष्ट करते हुए, उत्तरातिरिक्त करने हुए या एक करते हुए ऐसा भावना पास्त कर सकता विने वह ठीक समझें:

परंतु ग्रामीण प्राचिकारों द्वारा किसा जास्ति में बृद्धि करने वाला कोई प्रायेण परिवर्त नहीं किया जाएगा।

परन्तु यह और कि जहाँ प्रील प्राचिकार्थी की यह राय है कि नियम 6 के अधीन खजाने में किसी कर का संदाय नहीं किया गया है या पूर्णक संदाय नहीं है अथवा नियम 4 के उपनियम (4) के अधीन गत्तर रूप से प्रतिदाय किया गया है वहाँ जब तक प्रीलार्थी को प्रस्तावित प्राचीरण के विषय नियम 5 के उपनियम (2) में विनियिष्ट समय को परिसीमा के भीतर हेतुक दर्शन करने के लिए शुभना नहीं दे दे जातो है, ऐसे कर का संदाय करने के लिए निवेश बेने यात्रा कोई अदिग पारित नहीं किया जाएगा।

12. कलकटर को गुनरोधण की शक्तियाँ—सीमांशुल कलकटर स्व-प्रेरणा से या किसी अधिकत के प्रावेदन पर ऐसे किसी विनिरक्षण या आदेश का वैधान या अधिकृत के बारे में अपना समाजान करने के प्रयोजन के लिए किन्तु कार्यवाह्यों के भविलेख को, जिसमें उसके घट्टोनस्प किसी सीमांशुल अधिकारा ने प्रधिनियम या इन नियमों के अधीन कोई विनिरक्षण या आदेश (जो नियम 11 के अधीन अपाल में पारित आदेश नहीं है) पारित किया है, मांग सकेगा और उसको परीक्षा कर सकेगा और उस पर ऐसा आदेश पारित कर सकेगा जो वह ठंडक समझे:

परन्तु किसी शास्ति को घृणि करने वाला काई आदेश इस त्रियम के प्रश्नों सम पक्ष पारित नहीं किया जाएगा जब तक प्रस्तुति आदेश द्वारा प्रसादित व्यक्ति को उपर विकद हेतु दर्शाय करो का मनुचित व्यवस्था न दें दिया गया हो:

परंतु यह श्रीर कि जहां सोनार्गुलक कलश्टर को यह राय है कि लगानी में नियम ८ के अधीन लिया कर का काहि सदाय नहीं किया गया है या पूर्ण रूप से सदाय नहीं किया गया है अथवा नियम ४ के उपनियम (४) के अधीन एनत राति से उपरा प्रतिदाय किया गया है

वहाँ देसे कर के संदाय के लिए निवेश देने वाला कोई भी भावेश तक सही किया गया जब तक कि प्रस्तावित भावेश से प्रभावित होने वाले व्यक्ति का नियम 5 के उन-नियम (2) में विनियिष्ट समय की परिमिति के भीतर उसके विरुद्ध हेतुक घटित करने के लिए कोई सूचना नहीं दी जाती है।

(2) किसो विनियम या प्रादेश के संबंध में इस नियम के अन्तर्गत कोई कार्यवाहा ऐसे विनियम या प्रादेश का तारीख से एक वर्ष को कालाधिक की समाप्ति के पश्चात् संस्थित भृती का जाएगा।

(3) सोमाशुल्क प्रधिनियम को धारा 4 के प्रधेत्र सोमाशुल्क अपर कलक्टर के सर में नियुक्त काई सोमाशुल्क अधिकारी इस नियम के प्रधेत्र पुनर्रूपण का शक्तिर्गत कां प्रोग्राम करने के लिए सक्षम नहीं होता।

13. केन्द्रीय मरकार द्वारा पुनरीकाशः—(1) केन्द्रीय सरकार सभा से या नियम 11 अवधा नियम 12 के अधीन पारित किसी प्रावेश व्यक्ति के अधीन पारित किसी व्यक्ति के प्रावेश पर ऐसे प्रावेश का वातिल या वातिलन कर सकेगी।

(2) उत्तरियम् (1) के प्रधान कोई प्रावेदन उस प्रवेश की, जिसके विशद प्रावेदन किया जा रहा है, प्रावेदन को नियुक्ता का तारोष छः साम के मोतर किया जाएगा।

परंतु केन्द्रीय सरकार, यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि अपीलायी को प्रशास्त कारण से उत्तरीकृत छामालुक कालाबिधि के भीतर प्रावेदन प्रस्तुत करने से निवारित किया गया था तो वह उस प्रतिरिक्षण मास का प्रावधिक वे भोतर प्रावेदन को प्रस्तुत करने को मांगा वे सुकेगे।

(3) इस नियम के प्रधीन वास्ति का वृद्धि करने वाला कोई प्रावेश तब तक पारित नहीं किया जाएगा जब तक प्रत्यावित प्रावेश से प्रवावित व्यक्ति का बातिल या उपरान्त फिर आये के तिथि इस्पित प्रावेश को तरावा से एक वर्ष के मोहर उपरे विशद हेतुक प्रस्तुत करने को सुनवा नहीं दो जातो है।

(4) जहां केस्ट्रोप सचिवार को यह राय हो कि बजाने में नियम 6 के अधीन किसी कर का संवाद नहीं किया गया है या उसका पूर्णतः संदाय नहीं किया गया है प्रथमा नियम 4 के उत्तरान्यम (4) के प्रधान गलत रूप से उसका प्रतिवाद किया गया है, वहां ऐसे कर का संदाय करने के लिए नियम 4 वाला प्रादेश इस नियम के अधीन तब तक नहीं नहीं किया जाएगा जब तक कि प्रशासित प्रादेश द्वारा प्रशासित प्रक्रिया को नियम 5 के उत्तरान्यम (2) में विनियिष्ट समय की परिमीतों के भीतर द्वेषुक दर्शन करने के लिए सुनवा नहीं दे दी जाती है।

14. मरकार का साथ राजों का वसुली—जहाँ अविनियम के प्रधाय 5 के अधीन किसी व्यक्ति से मांगा गया कोई कर या किसी व्यक्ति द्वारा संदेश कोई प्राप्ति संदर्भ नहीं का गई है वह सोमायूलक सहायक कलकट्टर अपने द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाणपत्र जिसमें स्थित एकम विनियिष्ट को बाएँ, तैयार करेगा और उसे जिसे के कलकट्टर को भेजेगा जिसमें उक्त व्यक्ति संपत्ति का स्वामा है। या कारबाह चाहाता है: और उक्त कलकट्टर ऐसे प्रमाणपत्र का प्राप्ति पर उक्त व्यक्ति से उसमें विनियिष्ट एकम को वसुलो के लिए बैठे हो मगर सर होगा वाजों वह मू-राजस्व को बाधाया है।

15. निरोक्षण की शक्ति:—(1) प्रीताशुल्क के राष्ट्रपत्रिस प्रधिकारी के इस निमेत विशेष या साधारण प्रतिरक्षा द्वारा प्राप्तिकृत प्रत्येक सीमाशुल्क अधिकारी को यह प्रभिन्निचित करने के प्रयोजन के लिए कि इस प्रभिन्नियम या इस नियमों का अप्रेजेंटी का अनुपालन किया गया है या नहीं, किसी सम्बूद्धि समय पर बाहर के परिसर में प्रवेश करने की और उहाँ पाए गए किसी व्यक्ति से, जो तस्मान्य उसका आखिराएक है, किसी लेख-बहिग्रा, विवरणीय या अन्य वस्तुवेजों को उनके समझ उसके निरोक्षण के लिए पेश करने और उसे देसे अध्य जानकारों देने को अपेक्षा करने को जनितरी होती है। अन्य यह विभिन्नतय करने के प्रयोजन के लिए कि

या इस नम नियमों की प्रपेक्षार्थी का घटुपालन किया गया है या नहीं, युक्तियुक्त रूप से घपेक्षा करेगा।

(2) प्रधेक ऐसे प्रविकारी को अस्तर्वेशीय याक्षा पर याक्षियों को बहुत करने में लगे किसी बायुयान पर पहुँचने को स्वतंत्रता में होंगा और कलक्त में के किसी व्यक्ति से उच्च प्रयोगन के लिए उपरोक्त दस्तावेजों में से किसी का प्रस्तुत करने और उपरोक्त जानकारी देने को प्रपेक्षा करने को भक्तियाँ होंगी।

16. बायुयान या परिवर्त को तत्त्वाओं की विविधत : यदि सोमाणुल के किसी ऐसे प्रविकारी के पास जो सीमानुल सहायक कलक्टर की विविधत से नीचे का न हो, यह विवाह करने का कारण हो कि कोई दस्तावेज जो उसकी राय में इस प्रवितियम या इन नियमों के प्रधोग किसी कार्यवाही में उपयोगिता स्रुतगत होगा, किसी बायुयान या बाहक के किसी परिवर्त में गुप्त रूप से छिपा के रखा गया है तो सीमानुल या केन्द्रीय उत्तराध-भूलक अधिकारियों में से किसी प्रविकारी को ऐसे दस्तावेजों को तत्त्वाओं लेने के लिए प्राधिकृत कर सकेगा।

प्रकृष्ट

1. बाहक का नाम :
2. मास/कालावधि (जिससे यह विवरणी से संबंधित है)
3. मास/कालावधि के दीर्घन :
4. मास/कालावधि के दीर्घन प्रतिवाह्य की गई रकम
5. संपर्होत कुल रकम (3)-(4):
6. बाजार में संदर्भ की गई रकम:

[स 4/प्राई.ए.टी.टो/१९-फा. स. ३४९/२/६९-टो. आर. य.]
के. एल. दत्ता, उप सचिव,

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 27th June, 1989

No. 4/89-INLAND AIR TRAVEL TAX RULES

G.S.R. 646 (E).—In exercise of the powers conferred by section 48 of the Finance Act, 1989 (13 of 1989), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Inland Air Travel Tax Rules, 1989.

(2) They shall come into force on the 1st day of July, 1989.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires,—

(a) "Act" means the Finance Act, 1989 (13 of 1989);

(b) "Assistant Collector of Customs" means an officer appointed as such under section 4 of the Customs Act having jurisdiction under the said Act over Delhi;

- (c) "Central Excise Officers" has the same meaning as in the Central Excises and Salt Act, 1944;
- (d) "Collector of Customs" means an officer appointed under section 4 of the Customs Act as Collector of Customs, Delhi or Additional Collector of Customs, Delhi;
- (e) "Collector of Customs (Appeals)" means an officer appointed as such under section 4 of the Customs Act;
- (f) "Customs Act" means the Customs Act, 1962 (52 of 1962);
- (g) "Officers of Customs" has the same meaning as in the Customs Act;
- (n) "tax" means the inland air travel tax leviable under Chapter V of the Act;
- (i) "treasury" means—
 - i) the Customs House treasury; or
 - ii) The Reserve Bank of India constituted under section 3 of the Reserve Bank of India Act, 1934 (2 of 1934), or any branch of the State Bank of India constituted under section 3 of the State Bank of India Act, 1955 (23 of 1955), or a bank constituted under section 3 of the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) Act, 1970 (5 of 1970), or under section 3 of the Banking Companies (Acquisition and Transfer of Undertakings) Act, 1980 (40 of 1980), wherein the Central Government has an account in this behalf.

3. Collection of tax.—The tax shall be collected by a carrier authorised under sub-section (2) of section 42 of the Act at the time of issuing a ticket to a passenger or his agent for embarking on inland journey :

Provided that in a case where due to some reasons tax is not collected at the time of issuing a ticket, the tax shall be collected by the carrier before a passenger embarks on inland journey.

4. Refund of tax.—(1) In a case where a passenger, having purchased a ticket, decides not to embark on an inland journey, the amount of tax collected for such a journey shall be refunded to him or his agent in full by the carrier in the same manner as the fare is refunded.

(2) In any other case, a passenger or his agent claiming refund of any tax paid by him to the carrier may move an application to the carrier for refund of such tax before the expiry of a period of two years from the date of payment of the tax or the last date

of the journey in respect of which refund is being claimed, whichever is later.

(3) On receipt of an application under sub-rule (2), if the carrier is satisfied that the amount of tax paid has been erroneously collected and should be refunded, he may refund the amount to the passenger or his agent accordingly.

(4) Where a carrier, having paid into the treasury an amount by way of tax, finds that the same has been paid erroneously, he may prefer a claim by making an application for refund of such amount to the Assistant Collector of Customs before the expiry of a period of two years from the date of payment of the tax in respect of which the refund is claimed.

(5) If on receipt of an application under sub-rule (4), the Assistant Collector of Customs is satisfied that the amount of tax erroneously paid should be refunded, he may make an order accordingly.

5. Non-payment or short payment of tax.—(1) Where any tax due has, for any reason, either not been paid or has not been paid in full by a passenger or his agent, the carrier may, within two years from the last date of the journey, make a demand in writing to the passenger or his agent to pay the amount.

(2) Where any tax collected by a carrier has, for any reason, either not been paid or has not been paid in full into the treasury under rule 6 or has been erroneously refunded under sub-rule (3) of rule 4, the Assistant Collector of Customs may, within a period of two years from the relevant date, serve notice upon the carrier concerned, requiring him to show cause why he should not pay the amount specified in the notice :

Provided that where any tax had not been paid or has not been paid in full or has been erroneously refunded by reason of collusion or any wilful mis-statement or suppression of facts by the carrier, the provisions of this sub-rule shall have effect as if for the words "two years," the words "five years" were substituted.

(3) The Assistant Collector of Customs, after considering the representation, if any, made by the carrier on whom notice is served under sub-rule (1), shall determine the amount of tax to be paid by such carrier (not being in excess of the amount specified in the notice) and thereupon such carrier shall pay the amount so determined.

(4) For the purpose of sub-rule (2), the expression "relevant date" means—

(a) in case where the tax has not been paid, or has not been paid in full, the date of commencement

of the inland air journey to which the non-payment or the under-payment, as the case may be, relates, or, the date on which the carrier files the relevant return under these rules, whichever is later;

(b) in a case where the tax has erroneously been refunded under rule 4, sub-rule (4) of the date on which the refund was made.

6. Tax to be paid into the treasury.—The tax collected in any month by any carrier shall be paid by such carrier before the expiry of sixty days from the end of that month into the treasury :

Provided that the Collector of Customs may on sufficient cause being shown and having regard to the system of accounting adopted by any carrier allow such carrier to pay the tax within a further period not exceeding ninety days.

7. Return regarding tax collected, etc.—Every carrier required under rule 6 to pay the tax into the treasury shall file, in respect of every month before the expiry of sixty days from the end of that month, before the Collector of Customs, a return in that Form annexed to these rules, showing the amount of tax collected, amount refunded and the amount paid into the treasury :

Provided that the Collector of Customs may, having regard to the system of accounting adopted by any carrier allow such carrier to file such returns within a further period not exceeding ninety days.

8. Preservation of records by carrier.—Copies of all treasury challans or vouchers against which amounts collected as tax are paid into the treasury returns and all other documents relating to any inland journey shall be preserved by the carrier for a period of five years from the date on which such challans voucher return or other document was prepared :

Provided that the Collector of Customs may, by order in writing and for reasons to be recorded therein, require any carrier to preserve for a longer period than the said period of five years any such copy of challan, voucher, return or other document and the carrier against whom such order is made shall comply with such order.

9. Adjudication of penalties.—In every case in which any person is liable to penalty under section 46 of the Act, such penalty may be adjudged by the Assistant Collector of Customs.

10. Issue of show cause notice before levy of penalty.—No order imposing any penalty on any person shall be made unless such person—

(a) is given a notice in writing informing him of the grounds on which it is proposed to impose a penalty,

- (b) is given an opportunity of making a representation in writing within such reasonable time as may be specified in the notice, against the grounds for imposition of the penalty mentioned therein; and
- (c) is given a reasonable opportunity of being heard in the matter.

Provided that the notice referred to in clause (a) and the representation referred to in clause (b) may, at the instance of the person concerned, be oral

11. Appeal.—(1) Any person aggrieved by any decision or order passed under the Act, or these rules, by the Assistant Collector of Customs may, within three months from the date of communication of such decision or order, appeal to the Collector of Customs (Appeals), Delhi :

Provided that the appellate authority may, if satisfied that the appellant was prevented by sufficient cause from presenting the appeal within the aforesaid period of three months, allow it to be presented within a further period of three months

(2) The appellate authority may, after giving an opportunity to the appellant to be heard if he so desires, and after making such inquiry as may be necessary, pass such order as it thinks fit, confirming modifying or annulling the decision or order appealed against :—

Provided that no order enhancing any penalty shall be passed by the appellate authority :

Provided further that where the appellate authority is of the opinion that any tax has not been paid or has not been paid in full into the treasury under rule 6 or has been erroneously refunded under sub-rule (4) of rule 4, no order directing the payment of such tax shall be passed unless the appellant is given notice within the time limit specified in sub-rule (2) of rule 5 to show cause against the proposed order.

12 Powers of revision of collector.—(1) Collector of Customs may, of his own motion or on the application of any aggrieved person, call for and examine the record of any proceedings in which an Officer of Customs subordinate to him has taken any decision or passed an order under the Act or these rules (not being an order passed in appeal under rule 11) for the purpose of satisfying himself as to the legality or propriety of any such decision or order and may pass such order thereon as he thinks fit

Provided that no order enhancing any penalty shall be passed under this rule unless the person affected by the proposed order has been given a reasonable opportunity of showing cause against it

Provided further that where the Collector of Customs is of the opinion that any tax has not been paid or has not been paid in full into the treasury under rule 6 or has been erroneously refunded under sub-rule (4) of rule 4, no order directing the payment of such tax shall be made unless the person affected by the proposed order is given notice to show cause against it within the time limit specified in sub-rule (2) of rule 5

(2) No proceeding shall be initiated under this rule in respect of any decision or order after the expiry of a period of one year from the date of such decision or order

(3) An Officer of Customs appointed as Additional Collector of Customs under section 4 of the Customs Act shall not be competent to exercise any powers of revision under this rule.

13. Revision by Central Government —(1) The Central Government may, of its own motion or on the application of any person aggrieved by any order passed under rule 11 or rule 12, annul or modify such order

(2) An application under sub-rule (1) shall be made within six months from the date of the communication to the applicant of the order against which the application is being made :

Provided that the Central Government may, if it is satisfied that the applicant was prevented by sufficient cause for presenting the application within the aforesaid period of six months, allow it to be presented within a further period of six months.

(3) No order enhancing any penalty shall be passed under this rule, unless, within one year from the date of the order sought to be annulled or modified, the person affected by the proposed order has been given a notice to show cause against it.

(4) Where the Central Government is of the opinion that any tax has not been paid or has not been paid in full into the treasury under rule 6 or has been erroneously refunded under sub rule (4) of rule 4, no order directing the payment of such tax shall be made under this rule, unless the person affected by the proposed order has been given notice to show cause against it within the time limit specified in sub-rule (2) of rule 5

14. Recovery of sums due to Government. —Where any tax demanded from any person or any penalty payable by any person under Chapter V of the Act is not paid, the Assistant Collector of Customs may prepare a certificate signed by him specifying the amount due and send it to the Collector of the district in which the said person owns property or

resides or carries on business and the said Collector, on receipt of such certificate, shall proceed to recover from the said person the amount specified thereunder as if it were an arrear of land revenue.

15 Power to inspect .—(1) Every Officer of Customs authorised in this behalf by a special or general Order of a gazetted Officer of Customs shall for the purpose of ascertaining whether or not the requirements of the Act or these rules have been complied with, at any reasonable time, have access to any premises of any carrier and have powers to require any person found therein, who for the time being is incharge thereof to produce of him for his inspection any books of accounts, returns or other documents and to furnish to him such other information as he may reasonably required for the purpose of ascertaining whether the requirements of the Act or these rules have been complied with.

(2) Every such officer shall also have free access to any aircraft engaged in the carriage of passengers on an inland journey and have powers to require any person on board to produce any of the aforesaid documents and to furnish the aforesaid information, for the said purpose.

16. Power to search aircraft or premises.—If an Officer of Customs not below the rank of an Assistant Collector of Customs has reason to believe that any document which in his opinion will be useful or relevant to any proceeding under the Act or these rules are secreted in any aircraft or any premises of a carrier, he may authorise any Officer of Customs or Central Excise Officers to search for such documents.

FORM

1. Name of the carrier
2. Month/period (to which this return pertains)
3. Gross Amount collected during the month/period
4. Amount refunded during the month/period
5. Net amount collected (3—4)
6. Amount paid into the treasury

[No. 4/IATT/89—F. No. 348/2/89-TR U]
K. L. DTTA, Dy. Secy.

